हत्याओँ का धर्मशास्त्र और इस्लामी धर्म-युद्ध

(http://www.bbc.com/news/world-middle-east-35695648)

लघुकरण एवम अनुवाद: कप्तान शशि भुषण त्यागी

इस्लामिक स्टेट और समान विचारधारा वाले समूहों के वैचारिक या धार्मिक जडेँ इतिहास में गहरी हैँ और लगभग 7 वीं शताब्दी में ही इस्लाम की शुरुआत से हैँ. ईसाई धर्म में छह शतक पहले, और यहूदी धर्म कुछ आठ सदियों पहले की तरह, इस्लाम का जन्म भी मध्य पूर्व की कठोर, आदिवासी दुनिया में हुआ था. इतिहासकार और लेखक विलियम पोल्क लिखते हैं कि, "मूल ग्रंथ - ओल्ड टैस्टामेंट और कुरान आदिम जनजातीय यहूदी और अरब समाज को परिलक्षित करते हैँ और जिन नियमोँ को वो उल्लिखित करते हैँ वे दृढ-गंभीर और अपरिवर्तनीय थे."

वे ओल्ड टैस्टामेंट (पुराने नियम) में आदिवासी एकता और शक्ति और बढ़ाने का, तथा, कुरान में मूर्तिपूजक विश्वास और अभ्यास के अवशेष को नष्ट करने का उद्देश्य रखते थे. न तो यहूदी धर्म मेँ और न ही इस्लाम मेँ 'विचलन' - धर्म को त्यागने की अनुमति है. दोनों ही सत्तावादी धार्मिक अवधारणाएँ हैँ. जैसा कि इतिहास गवाही देता है, समय के साथ इस्लाम एक विशाल क्षेत्र में फैला गया, और कई अन्य समाजों, धर्मों और संस्कृतियों के साथ सम्मिलन एवम समायोजन करता गया. व्यवहारिक रूप मेँ अनिवार्यतः यह अलग-अलग तरीकों से उत्परिवर्तित, अक्सर अधिक व्यावहारिक बनते हुए इसने अक्सर सत्ता और राजनीति और लौकिक शासकों की मांगों को दूसरी जगह दी है.

कट्टरपंथी मुस्लिम परंपरावादियों के लिए यह विचलनवादिता थी और आरम्भ से ही वहाँ विचारों का टकराव था जिस में इस्लाम के शुरुआती दिनों की "पवित्रता" की एक सख्त वापसी के लिए तर्क रखने वालोँ ने अक्सर इसकी भारी कीमत चुकाई है. अहमद इब्न हनबाल (780-855), जो सुन्नी इस्लामी न्यायशास्त्र के मुख्य स्कूलों में से एक का स्थापक था, को जेल में बंद किया गया और एक बार बगदाद में अबु खलीफा के साथ एक विवाद में कोडे मारने से बेहोश हो गया था. करीब पांच शताब्दियों के बाद, इसी सख्त रूढ़िवादी परम्परा का एक और धर्मशास्त्री इब्न तमैया की दमिश्क की जेल में मृत्यु हो गई.

इन दो लोगोँ को बाद में विचारकों और आंदोलनों को जिसे "सलाफिस्ट" के रूप में जाना जाने लगा, के आध्यात्मिक-पूर्वजों के रूप में देखा जाता है. ये सलाफिस्ट पहले मुस्लिम पूर्वजों- सलाफ-अल-सालेह (धार्मिक-पूर्वजों) के तरीके की वापसी की वकालत करते हैँ. इन्होँने बाद मेँ एक ऐसे व्यक्ति को प्रेरित किया जिसकी सोच और लेखन से वहाबी क्षेत्र पर और सलाफिस्ट आंदोलन पर एक विशाल और सतत प्रभाव पडा और उसे उसका नाम भी मिल गया. यह था - मुहम्मद-बिन-अब्द-अल-वहाब, जो कि 1703 में अरब प्रायद्वीप के बीच नेज़्द क्षेत्र में एक छोटे से गांव में पैदा हुआ था. इस प्रखर इस्लामी धार्मिक एवम विद्वान ने इस्लाम की मूल आस्था का सबसे कड़ा और सख्त संस्करण स्थापित,

विकसित एवम प्रचारित किया और तत्कालीन राजनीतिक और सैन्य शक्ति के धारकों के साथ समझौते कर इसे समर्थन करने और प्रसारित करने की मांग की. उस दिशा में एक प्रारंभिक प्रयास के रूप में अपनी पहली कार्रवाई ज़ायेद-इब्न-अल-ख़तब (पैगंबर मुहम्मद के साथियों में से एक) के मकबरे को नष्ट करने के लिए की वो भी इस आधार पर कि सलाफिस्ट धर्मशास्त्र की तपस्या-सिद्धांतों के अनुसार, कब्रों की पूजा एक धार्मिक अपराध 'शिर्क' है जिसका अर्थ है अल्लाह के अलावा किसी अन्य की पूजा करना!

इसे धर्म-विरोधी गतिइ-विधियों के कारण मिस्र से देश-निकाला दिया गया. इसने नयी शरण स्थली तलाश करने के लिये देश-विदेश भटकना शुरू कर दिया. लेकिन यह 1744 का वर्ष था, जब अब्द-अल-वहाब नें सऊदी-अरब के तत्कालीन स्थानीय शासक मोहम्मद-इब्न-सउद के साथ अपना महत्वपूर्ण गठबंधन बनाया. यह एक समझौता था जिसके तहत वहाबी ने दोनों के लाभ के लिए सऊदी राजनीतिक और सैन्य विस्तार के लिए आध्यात्मिक एवम वैचारिक आयाम प्रदान किया. ये दोहरा गठबंधन कई परिवर्तनों के मध्य से गुजर रहे प्रायद्वीप के सबसे अधिक इलाके में फैले सउद-वंश की सभा के कभी अति-असहज निर्णयों के बावज़ूद भी एक अति रूढ़िवादी वहाबी सलाफियत के धार्मिक प्रतिष्ठानों के रूप में साथ आज भी प्रभावी है.

सऊदी अरब में वहाबी सलाफियत की पैठ तथा इसको अरबों पैट्रो-डोलर्स उपलब्ध होने के कारण आधुनिक समय में इस क्षेत्र में जिहादी आतंकवाद के लिये यह स्रोत्र प्रदान करता है. 'जिहाद' अल्लाह का रास्ता है, जिसके अर्थ व्यक्तिगत संघर्ष के कई प्रकार हो सकते हैं, लेकिन अधिकतर इसका अर्थ है धर्म-रक्षा के लिये लडा जाने वाला युद्ध! लेकिन 20 वीं सदी में सलाफिस्म को लाने के लिए आदमी को सबसे व्यापक श्रेय, या दोष दिया जाता है वह है मिस्र का विचारक सैयद कुतुब. उसने अब्द- अल-वहाब और उसके पूर्ववर्तियों की विरासत को जिहादी आतंकवादियों की एक नई पीढ़ी के साथ एक सीधा पुल प्रदान किया है, जिससे अल-कायदा जैसे आतंकी संगठन तथा आने वाले समय की अन्य आतंक विषयक चिंताओं को जन्म दिया!

मिस्र में उसने ये विचारधारा विकसित की कि विश्व-युद्ध के अंत के बाद तुर्क ओट्टोमान साम्राज्य के पतन के बाद से क्षेत्र में पश्चिम प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने नियंत्रण बढाने में लगा है जिसमें स्थानीय शासकों का सहयोग है, जो भले ही मुसलमान होने का दावा कर सकते हैं, लेकिन वास्तव में वे अपने सही धार्मिक रास्ते से इतना भटक गये हैं कि इनके अब मुस्लिम होने पर भी सन्देह है.

कुतुब के लिए पश्चिम और उसके स्थानीय एजेंटों - दोनों के खिलाफ आक्रामक जिहाद मुस्लिम दुनिया के लिए एक पुनरुद्धार का एक ही रास्ता था. दरअसल यह 'तकफ़ीर' - एक मुस्लिम को विधर्मी या काफिर घोषित करने का एक रास्ता है, जिसके अंतर्गत उसको मारना उचित और यहां तक अन्य मुस्लिमों का अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य्य है.

हालांकि वह एक सक्रिय जिहादी होने के बजाय विचारक और बौद्धिक था, कुतुब को मिस्र के अधिकारियों द्वारा खतरनाक तरीके से विध्वंसक माना गया. उन्होंने उसे मुस्लिम ब्रदरहुड की एक साजिश के अनर्गत राष्ट्रवादी राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर की हत्या करने में शामिल होने के आरोप में 1966 में फांसी पर लटका दिया गया. कुतुब के विचारों को 24 पुस्तकों में लिखा गया है, जिनको दसियों लाखों लोगों द्वारा पढ़ा गया है. वह अयमन अल-ज़वाहिरी जैसे लोगों के व्यक्तिगत संपर्क में था जो के वर्तमान में अल- कायदा का नेता है.

अल -कायदा के संस्थापक ओसामा बिन लादेन के एक अंतरंग ने कहा है कि, " कुतुब एक ऐसा व्यक्ति है जिसने हमारी पीढ़ी को सबसे अधिक प्रभावित किया था." उसे सभी जिहादी विचार-धाराओं के स्रोत और "इस्लामी क्रांति के दार्शनिक" के रूप में जाना जाता है.

उसे फांसी पर लटका देने के 35 से अधिक वर्षों के बाद, अल- कायदा के 9/11 2001 में अमेरिकी ट्विन टावर्स पर हुए हमले की जांच के सरकारी आयोग ने निष्कर्ष निकाला है: "ओसामा-बिन-लादेन कुतुब की तरह कट्टर-सोच का व्यक्ति था जिसके कारण उसे और उसके अनुयायियों को अकारण सामूहिक हत्या और संकट में पडे धर्म की रक्षा के लिये युद्ध को तर्कसंगत बनाने की सुविधा मिली."

उसका प्रभाव आज भी मौज़ूद है और 'इस्लामिक राष्ट्र' और उसके पूर्ववर्ती इस्लामी आंदोलनों की जडों के बारे में इराकी विशेषज्ञ हिशाम अल-हाशमी ने कहा है: "वे दो बातों पर स्थापित हैं : मुहम्मद इब्न अब्द अल वहाब के लेखन पर आधारित एक तक्फीरी विश्वास, और पद्धति के रूप में, सैयद कुतुब का दिखाया रास्ता"